अगली UNSC पारी के लिए तैयार होना

लेखक - कृष्णन श्रीनिवासन (पूर्व विदेश सचिव)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

31 जुलाई, 2019

"कैसे सभी सुरक्षा परिषद के मुद्दे उपमहाद्वीप पर प्रभाव डालते हैं, भारत को इन सब पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा।"

इस तथ्य के बावजूद कि भारत ने एशिया-प्रशांत समूह से जापान के अलावा किसी भी देश की तुलना में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के एक गैर-स्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है, यह संतोष की बात है और भारतीय कूटनीति के लिए एक श्रद्धांजलि है कि समूह ने सर्वसम्मति से इस वर्ष भी भारत को आठवें द्विवर्षीय कार्यकाल के लिए समर्थन देने का निर्णय लिया है। चुनाव अगले साल जून में होने हैं। इसका मतलब है कि भारत का चुनाव सुनिश्चित है और इसका कार्यकाल कैलेंडर वर्ष 2021 और 2022 में चलेगा।

तेजी से बदलती गतिशीलता

यह अनुमान लगाना कि वैश्विक संगठन में शांति और संघर्ष से संबंधित उच्चतम निर्णय लेने वाले अंग में भारत के कार्यकाल के दो और तीन साल के दौरान क्या मुद्दे सामने आएंगे, स्पष्ट रूप से समस्याग्रस्त है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की गतिशीलता तेजी से आगे बढ़ रही है।

सोवियत काल के बाद की वाशिंगटन की सहमति, अगर यह वास्तव में अस्तित्व में थी, तो तीन कारकों के मद्देनजर अनसुलझा है: प्रमुख शक्तियों के बीच तनाव; पश्चिम एशिया में छद्म युद्ध और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा धमकी और आर्थिक प्रतिबंधों का व्यापक और डरावना उपयोग, जो 150 देशों में एक सैन्य और खुफिया उपस्थिति और 70 देशों में 800 बेस कैंप के साथ एक सैन्य विदेश नीति का अनुसरण करता है।

चीन के विकास या बढ़ते कदम और रूसी आक्रामकता को वाशिंगटन द्वारा सैन्य और आर्थिक उपायों के माध्यम से विरोध किया जाता है। यह प्रतिस्पर्धा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उच्च प्रौद्योगिकी और 5G के क्षेत्र में अपना-अपना वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य में निहित है, जो आने वाले दशकों में एक बड़ा रणनीतिक महत्व बन जाएगा। जहाँ एक तरफ इस परिवर्तनशील दुनिया में बड़ी और मध्यम शक्तियों के बीच अपना वर्चस्व स्थापित करने की होड़ लगी हुई है, वही दूसरी तरफ रणनीतिक स्वायत्तता और समानता जैसी अवधारणाओं के आधार के संदर्भ में प्रमुख शक्तियों के बीच ध्रुवीकरण बढ़ गया है, फिर भी कुछ स्थिरांक मौजूद हैं। चाहे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प फिर से चुने जाये या नहीं, लेकिन अमेरिका फर्स्ट सिद्धांत किसी न किसी रूप में रहेगा क्योंकि देश के एक बड़े निर्वाचन क्षेत्र का समर्थन इसे प्राप्त है। यह अमेरिकी विदेश नीति को अधिक सुगम बनाता है, जो बदले में संयुक्त राष्ट्र के भीतर सुधार प्रक्रिया और UNSC की स्थायी सदस्यता के विस्तार के लिए कम समस्याओं का निर्माण करेगा, जिसकी आशा भारत करता है।

भारत अपने शब्द का उपयोग एक गैर-स्थायी सदस्य के रूप में अपनी साख को अंतर्राष्ट्रीय समाज के रचनात्मक और जिम्मेदार सदस्य के रूप में बढ़ाने के लिए कर सकता है, लेकिन इसकी स्थिति का उन्नयन कब होगा यह अनिश्चित है। इस समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि भारत, जापान, जर्मनी और ब्राजील को यूएनएससी में शामिल किया जाता है, जिसके लिए भारत समूह प्रतिबद्ध है, तो यह पश्चिम बनाम शेष विश्व मामलों के पक्ष में और भी अधिक असंतुलन का निर्माण करेगा। भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, जिसे निराशावादी भी नहीं नकार सकते। तदनुसार, इसकी आवाज

को दबाया नहीं जा सकता है और इसने बहुपक्षवाद पर जोर देकर और अपने कार्यकाल के दौरान एक महत्त्वपूर्ण योगदान देकर दुनिया को सुरक्षित बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

बहुध्रुवीय फोकस

भारत को एक बहुध्रुवीय दुनिया के उद्देश्य को बनाए रखने और एकपक्षीयता, जातीय-केन्द्रवाद, संरक्षणवाद और नस्लीय असहिष्णुता के प्रति मौजूदा रुझान का मुकाबला करने की आवश्यकता है। इसे विश्व व्यापार संगठन को कमजोर बनाने वाले अमेरिकी प्रयासों से बचाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि डब्ल्यूटीओ का विवाद तंत्र विकासशील देशों के लिए एक संसाधन है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद और अन्य संयुक्त राष्ट्र के अंगों के द्वारा कार्य भी है। भारत को सामूहिक विनाश के हथियारों के गैर-भेदभावपूर्ण उन्मूलन, ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ पर्यावरण की सुरक्षा, सशस्त्रीकरण से बाहरी दुनिया की सुरक्षा और विश्व राजनीति में विविधता और बहुलता के लिए सम्मान बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। भारत को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद-2 की वैधता को रेखांकित करना चाहिए जो अन्य देशों द्वारा घरेलू मामलों में हस्तक्षेप के खिलाफ देश को संप्रभुता और सुरक्षा उपाय प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय समाज में एक नियम-आधारित आदेश के सम्मान को बनाए रखने के लिए, भारत को सुरक्षा परिषद और जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते द्वारा समर्थित ईरान के साथ बहुपक्षीय समझौते जैसी संधियों को रेखांकित करना चाहिए।

देश-विशिष्ट विषयों में, जो यूएनएससी के समक्ष फिर से प्रकट होने की संभावना है, वह साइप्रस, फिलिस्तीन, यूक्रेन और उत्तर कोरिया के 'ठंडे पड़े हुए' विवाद हैं। इनमें से प्रत्येक पर, भारत ने एक संतुलित स्थिति भी अपना ली है जिसे फिर से स्थापित करने की आवश्यकता है। कश्मीर संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे पर कायम है और अगर कश्मीर घाटी में हालात बिगड़ते हैं, तो इस मुद्दे को पाकिस्तान द्वारा UNSC में पुनर्जीवित किया जा सकता है, हालांकि तीसरे पक्ष द्वारा भारत-पाकिस्तान विवादों में खुद को शामिल करने की संभावना बहुत कम है। अगर यह खबर सच हैं कि श्री मोदी चीन के साथ संबंधों को सामान्य बनाने की कोशिश करने वाले हैं, तो यह भारत की स्थिति को बहुत मजबूत करेगा।

पाकिस्तान और आतंकी कोण

भारत की अर्थव्यवस्था और उसकी लोकतांत्रिक प्रणाली की वृद्धि ने इसे मजबूत बनाया है; क्योंकि इससे पहले हमने देखा है कि चीन को उइगरों के संबंध में क्या हासिल हुआ था। पाकिस्तान के साथ नई दिल्ली की अति व्यस्तता ने अंतर्राष्ट्रीय और सीमा पार आतंकवाद के विषय में अपनी अभिव्यक्ति को दर्शाया है। संयुक्त राष्ट्र की समितियों में आतंकवाद के खिलाफ एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सवाल पर कई वर्षों से चर्चा चल रही है, और यूएनएससी इस मामले में शीर्ष मंच नहीं बनना चाहेगा। भारत पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूहों और व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने के लिए UNSC की प्रतिबंध उपसमिति पर अपनी उपस्थिति का उपयोग कर सकता है।

अगले कुछ वर्षों में नई दिल्ली के लिए विश्व मंच पर एक प्रमुख भूमिका निभाने वाला साबित होगा, लेकिन दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भारत के लिए महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थिति थोड़ी कमजोर है। इस संबंध में, भारत की क्षेत्रीय स्थिति अपर्याप्त रूप से विश्वसनीय है। तदनुसार, कैसे सभी सुरक्षा परिषद के मुद्दे उपमहाद्वीप पर प्रभाव डालते है भारत को इन सब पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व एथेंस में डेमोस्टेन्स ने कहा था कि "राजनयिकों के पास लड़ाई करने के लिए कोई युद्धपोत नहीं होता है, उनके हथियार शब्द और अवसर होते हैं।" UNSC में भारत की उपस्थिति देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के अवसर प्रस्तुत करेगी। पश्चिम एशिया, रूस और चीन के प्रति भारत की निकट-पड़ोस में अमेरिकी नीतियाँ ऐसी चुनौतियाँ पेश करती हैं जिन्हें केवल महान कौशल और संतुलन के साथ पूरा किया जा सकता है। भारत को अपनी योग्यता और वैधता-आधारित निर्णयों के साथ परिषद में अपने आठवें कार्यकाल को समाप्त करने का लक्ष्य बरकरार रखना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (यूएनएससी)

चर्चा में क्यों?

- भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत के तहत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (यूएनएससी) में भारत की अस्थाई सदस्यता के लिए 55 देशों के एशिया-प्रशांत समूह ने सर्वसम्मति से अपना समर्थन दिया है।
- इस समूह में चीन और पाकिस्तान भी शामिल हैं। भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करने वाले देशों में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, कुवैत, किर्गिस्तान, मलेशिया, मालदीव, म्यांमार, नेपाल, कतर, सऊदी अरब, श्रीलंका, सीरिया, तुर्की, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और वियतनाम भी शामिल हैं।
- इस समर्थन से भारत की दावेदारी काफी मजबूत हो गई है। यह चुनाव अगले साल जून में हो सकता है।
- अगर भारत इस चुनाव में जीतता है तो अगले दो सालों के लिए भारत यूएन के सिक्योरिटी काउंसिल का अस्थाई सदस्य बन जाएगा। यह चयन दो सालों के लिए होगा।
- असल में यूनएससी में 2021-22 के लिए पाँच देशों को अस्थाई सदस्य बनाने के लिए चुनाव किया जाएगा। इसमें कुल 15 देशों ने दावेदारी की है। इन 15 देशों में से किन्हीं पाँच को यूएनएससी का अस्थाई सदस्य बनाया जाएगा।
- भारत इसके पहले 7 बार 1950-1951, 1967-1968, 1972-1973, 1977-1978, 1984-1985, 1991-1992 और 2011-2012 की समयावधियों में अस्थायी सदस्य रह चुका है।

क्या है?

- सुरक्षा परिषद्, संयुक्त राष्ट्र की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई है, जिसका गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1945 में हुआ था।
- सुरक्षा परिषद् के पाँच स्थायी सदस्य हैं-अमेरिका, ब्रिटेन, फ्राँस, रूस और चीन। सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के पास वीटो का अधिकार होता है।
- इन देशों की सदस्यता दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के शक्ति संतुलन को प्रदर्शित करती है।
- इन स्थायी सदस्य देशों के अलावा 10 अन्य देशों को दो साल के लिये अस्थायी सदस्य के रूप में सुरक्षा परिषद् में शामिल किया जाता है।
- स्थायी और अस्थायी सदस्य बारी-बारी से एक-एक महीने के लिये परिषद् के अध्यक्ष बनाए जाते हैं।
- अस्थायी सदस्य देशों को चुनने का उदेश्य सुरक्षा परिषद् में क्षेत्रीय संतुलन कायम करना है।
- अस्थायी सदस्यता के लिये सदस्य देशों द्वारा चुनाव किया जाता है। इसमें पाँच सदस्य एशियाई या अफ्रीकी देशों से, दो दक्षिण अमेरिकी देशों से, एक पूर्वी यूरोप से और दो पश्चिमी यूरोप या अन्य क्षेत्रों से चुने जाते हैं।

स्थायी सीट से भारत को क्या होंगे लाभ?

- भारत महत्त्वपूर्ण वैश्विक मुद्दे और नीति निर्माण में अहम भूमिका निभा पाएगा।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के प्रभाव को कम करने में मदद् मिलेगी।
- भारत की उभरती हुई सुपर पावर की छवि को बढ़ावा मिलेगा।
- पीओके तथा बलूचिस्तान के संदर्भ में पाकिस्तान पर मजबूत पकड़ बनाने में सक्षम हो पाएगा।
- देश का सामाजिक-आर्थिक विकास कर पाएगा।
- स्थायी सीट भारत को वैश्विक भू-राजनीति में अधिक मजबूती से अपनी बात कहने में सक्षम बनाएगी।
- सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता भारत को वीटो पावर प्रदान करेगी।
- सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता बाह्य सुरक्षा खतरों और भारत के खिलाफ राज्य प्रायोजित आतंकवाद के समाधान के लिये तंत्र को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगी।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. हाल ही में भारत ने सुरक्षा परिषद् के सदस्य के रूप में एशिया-प्रशांत क्षेत्र से अपनी दावेदारी प्रस्तुत की।
2. पाकिस्तान को छोड़कर एशिया-प्रशांत ग्रुप के सभी सदस्यों ने भारत का समर्थन किया है।
3. अगर भारत को चुन लिया जाता है तो ऐसा आठवीं बार होगा कि भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के सदस्य के रूप में कार्य करेगा।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) केवल 1

(c) 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements-

1. India recently presented its claim as a member of Security Council from Asia-Pacific Region.
2. All members of Asia- Pacific except Pakistan have supported India.
3. If India is chosen then it will happen for eighth time when India will act as a member of United Nations Security Council.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2 (b) Only 1

(c) 1 and 3 (d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल ही में भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (UNSC) के अस्थायी सदस्य के रूप में अपनी दावेदारी प्रस्तुत की। उन कारकों की चर्चा कीजिए जो भारत की सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के दावे को मजबूत करते हैं?

(250 शब्द)

Q. India has recently presented its claim as a non-permanent member of the United Nations Security Council (UNSC). Discuss the factors that strengthen the Indian claim of permanent membership at Security Council.

(250 Words)

नोट : 30 जुलाई को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

Committed to